अध्याय 8: रुबाइयाँ

विषय-सूची

5 प्रश्नावली · 7 प्रश्न

प्रश्नावली 8.1	पाठ के साथ	2 प्रश्न
प्रश्नावली 8.2	टिप्पणी करें	2 प्रश्न
प्रश्नावली 8.3	कविता के आसपास	1 प्रश्न
प्रश्नावली 8.4	आपसदारी	1 प्रश्न
प्रश्नावली 8.5	शब्द-छवि	1 प्रश्न

प्रश्नावली 8.1 — पाठ के साथ

प्रश्न 1

शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है?

हल

पाँचवीं रुबाई में फ़िराक ने राखी के लच्छों का वर्णन किया है: 'बिजली की तरह चमक रहे हैं लच्छे / भाई के है बाँधती चमकती राखी।'

राखी के लच्छे रेशमी और चमकीले होते हैं। 'बिजली की तरह चमक' — यह उपमा दो भाव एक साथ व्यंजित करती है:

पहला भाव — बहन के प्रेम की तीव्रता: बिजली जैसी तेज और क्षणिक चमक यह दर्शाती है कि भाई-बहन का यह स्नेह-बंधन कितना ज्वलंत और भावपूर्ण है।

दूसरा भाव — रक्षाबंधन की पवित्रता: सावन में आसमान में छायी हलकी-हलकी घटा और उसमें बिजली की चमक — यह प्राकृतिक दृश्य राखी की चमक से मिलकर एक अद्भुत संयोग बनाता है। जैसे बादलों और बहन का संबंध एक-सा है — दोनों अपने प्रिय की रक्षा का भाव रखते हैं।

कुल मिलाकर, शायर यह भाव व्यंजित करना चाहता है कि बहन का प्रेम और रक्षाबंधन का बंधन उतना ही तेज, चमकीला और प्रभावशाली है जितनी घटाओं में बिजली की चमक।

उत्तर: शायर ने राखी के लच्छों को बिजली की चमक से उपमित करके बहन के प्रेम की तीव्रता और रक्षाबंधन के पवित्र बंधन की चमक-भरी ज्वलंतता को व्यंजित किया है। सावन की घटाओं में बिजली जैसे चमकते लच्छे भाई-बहन के स्नेह-बंधन की उज्ज्वलता और भावपूर्णता के प्रतीक हैं।

प्रश्न 2

खुद का परदा खोलने से क्या आशय है?

हल

यह प्रश्न चौथी रुबाई के संदर्भ में है जिसमें माँ बच्चे को दर्पण (आईना) देकर कहती है: 'देख आईने में चाँद उतर आया है।'

आईना (दर्पण) स्वयं को देखने का माध्यम है — खुद का चेहरा, खुद की असलियत।
'खुद का परदा खोलना' का आशय है — स्वयं को उजागर करना, अपने भीतर की सच्चाई को सामने लाना।
माँ बच्चे को आईना देकर उसे अपना ही चेहरा दिखाती है और कहती है कि देखो, आईने में चाँद उतर आया है — अर्थात् बच्चे का रूपवती मुखड़ा ही चाँद जैसा है।
इस प्रकार 'खुद का परदा खोलना' का आशय है — आत्म-परिचय कराना; अपनी सुंदरता, अपनी पहचान को स्वयं अनुभव करना।
फ़िराक के काव्य-संदर्भ में यह भाव यह भी दर्शाता है कि कल्पना और वास्तविकता एक ही हैं — चाँद की परछाईं आईने में चाँद ही है।

उत्तर: चौथी रुबाई में माँ बच्चे को दर्पण (आईना) देकर उसे उसका अपना रूपवती मुखड़ा दिखाती है, जिसे वह 'आईने में चाँद' कहती है। 'खुद का परदा खोलने' का आशय है — स्वयं को उजागर करना, अपनी सुंदरता और पहचान को अनुभव करना। आईना एक ऐसा माध्यम है जो खुद (स्वयं) को सामने रखता है — अर्थात् अपने ही रूप का दर्शन।

प्रश्नावली 8.2 — टिप्पणी करें

प्रश्न 1

(क) गोदी के चाँद और गगन के चाँद का रिश्ता।

हल

पहली रुबाई में: 'आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी / हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी।'
यहाँ 'चाँद के टुकड़े' से अभिप्राय है गोद का बच्चा — जो माँ को आसमान के चाँद जैसा प्रिय और उज्ज्वल लगता है।
चौथी रुबाई में: 'आँगन में ठुनक रहा है जिदयाया है / बालक तो हई चाँद पै ललचाया है / दर्पण उसे दे के कह रही है माँ / देख आईने में चाँद उतर आया है।'
यहाँ बच्चा आकाश के असली चाँद को चाहता है। माँ उसे दर्पण देकर कहती है — देखो, आईने में चाँद उतर आया है।
गोदी का चाँद (बच्चा) और गगन का चाँद — दोनों में गहरा रिश्ता है:
माँ की नज़र में बच्चा ही उसका चाँद है — 'चाँद के टुकड़े को खड़ी'।
बच्चे की नज़र में आकाश का चाँद खिलौना है — वह उसे पाना चाहता है।
माँ आईने में आकाश के चाँद की परछाईं दिखाकर बच्चे को संतुष्ट करती है — यानी गोदी का चाँद (बच्चा) और गगन का चाँद एक ही छवि में मिल जाते हैं।
फ़िराक का यह बिम्ब भारतीय लोक-जीवन में प्रचलित 'चंदामामा' की परंपरा से जुड़ा है और वात्सल्य की कोमल अनुभूति को व्यक्त करता है।

उत्तर: गोदी का चाँद माँ के लिए उसका बच्चा है — जो उसे आसमान के चाँद जैसा प्रिय है। गगन का चाँद बच्चे का खिलौना है — जिसे वह पाना चाहता है। चौथी रुबाई में माँ आईने में चाँद की परछाईं दिखाकर दोनों को एक कर देती है — गोदी का चाँद (बच्चा) और गगन का चाँद आईने में एक ही छवि बन जाते हैं।

प्रश्न 2

(ख) सावन की घटाएँ व रक्षाबंधन का पर्व।

हल

पाँचवीं रुबाई में फ़िराक ने सावन और रक्षाबंधन को एक साथ रखा है: 'रक्षाबंधन की सुबह रस की पुतली / छायी है घटा गगन की हलकी-हलकी।'
रक्षाबंधन सावन (श्रावण) मास की पूर्णिमा को आता है। सावन में आकाश पर हलकी-हलकी घटाएँ छाई रहती हैं।
घटा का बादलों से संबंध है, बादलों का बिजली से — और बिजली की चमक राखी के लच्छों में झलकती है।
यह संबंध-श्रृंखला: 'सावन → घटा → बिजली → राखी के लच्छे → भाई-बहन का बंधन।'
'रस की पुतली' — बहन की मनोदशा का सुंदर चित्रण; भाई की कलाई पर राखी बाँधते समय बहन के मन में जो मधुर भाव होते हैं, वह रस से भरे हैं।
सावन की घटाएँ इस उत्सव को और अधिक भावपूर्ण बना देती हैं — जैसे प्रकृति स्वयं इस स्नेह-बंधन का उत्सव मना रही हो।

तात्पर्य: फ़िराक ने प्रकृति (सावन, घटा, बिजली) और लोक-परंपरा (रक्षाबंधन) को मिलाकर भाई-बहन के रिश्ते को एक अनूठा काव्यात्मक रूप दिया है।

उत्तर: रक्षाबंधन सावन की पूर्णिमा पर आता है। सावन की हलकी-हलकी घटाएँ, बिजली की चमक और राखी के चमकते लच्छे — फ़िराक ने इन्हें एक श्रृंखला में पिरोया है। घटा और भाई-बहन का बंधन — दोनों में एक सजीव प्रेम-संबंध है। प्रकृति मानो स्वयं इस पवित्र पर्व का उत्सव मना रही है।

प्रश्नावली 8.3 — कविता के आसपास

प्रश्न 1

इन रुबाइयों से हिंदी, उर्दू और लोकभाषा के मिले-जुले प्रयोगों को छाँटिए।

हल

फ़िराक गोरखपुरी की इन रुबाइयों में हिंदी, उर्दू और लोकभाषा का अनूठा मिश्रण है:

उर्दू/फ़ारसी शब्द:
— गेसू (बाल/केश) — उर्दू शब्द
— रूपवती (सुंदर) — यहाँ उर्दू रंग में प्रयुक्त
— दर्पण (आईना का पर्याय, संस्कृत मूल) — रुबाई में आईना (उर्दू/फ़ारसी) के साथ प्रयुक्त
— आईना (दर्पण) — उर्दू/फ़ारसी शब्द
— लच्छे — उर्दू/लोकभाषा में प्रचलित
— ललचाया — लोकभाषा रूप

हिंदी शब्द:
— आँगन, हाथों, गोद, हँसी, चाँद, घर, बच्चा, बिजली, राखी
— खिलखिलाते, झुलाती, जगमगाते, पिन्हाती

लोकभाषा/बोलचाल के प्रयोग:
— 'लोका देना' — उछाल-उछाल कर प्यार करने की क्रिया (लोकबोली)
— 'हई' — 'है ही' का लोकभाषा रूप
— 'जिदयाया' — जिद करने वाला (लोकबोली)
— 'ठुनक रहा है' — रूठकर मचलना (लोकभाषा)
— 'लावे' — लाती है (लोकभाषा का क्रिया रूप)
— 'पुते और सजे' — पुते हुए और सजे हुए (बोलचाल)
— 'पिन्हाती' — पहनाती है (लोकबोली रूप)
— 'रस की पुतली' — लोक प्रयोग, मधुर भाव की बच्ची/बहन

यह मिश्रण फ़िराक की उस शैली का प्रतिनिधित्व करता है जिसे गांधी जी हिंदुस्तानी कहते थे।

उत्तर: उर्दू/फ़ारसी प्रयोग: गेसू, आईना, लच्छे; हिंदी प्रयोग: आँगन, चाँद, बच्चा, राखी, बिजली; लोकभाषा/बोलचाल: लोका देना, हई, जिदयाया, ठुनक, पिन्हाती, लावे, रस की पुतली। फ़िराक ने तीनों भाषाओं को मिलाकर वह 'हिंदुस्तानी' रूप रचा जो घरेलू जीवन को सहज और सजीव ढंग से व्यक्त करता है।

प्रश्नावली 8.4 — आपसदारी

प्रश्न 1

कविता में एक भाव, एक विचार होते हुए भी उसका अंदाजे बयाँ या भाषा के साथ उसका बर्ताव अलग-अलग रूप में अभिव्यक्ति पाता है। इस बात को ध्यान रखते हुए नीचे दी गई कविताओं को पढ़िए और दी गई रुबाई में से समानार्थी पंक्तियाँ ढूँढिए। (क) मैया मैं तो चंद्र खिलौना लैहों। — सूरदास (ख) वियोगी होगा पहला कवि / आह से उपजा होगा गान / उमड़ कर आँखों से चुपचाप / बही होगी कविता अनजान — सुमित्रनंदन पंत (ग) सीस उतारे भुईं धरे तब मिलिहैं करतार — कबीर

हल

(क) सूरदास — 'मैया मैं तो चंद्र खिलौना लैहों।'
सूरदास की इस पंक्ति में बालकृष्ण माँ से चाँद माँग रहे हैं।
फ़िराक की रुबाई में समानार्थी भाव चौथी रुबाई में है:
'आँगन में ठुनक रहा है जिदयाया है / बालक तो हई चाँद पै ललचाया है।'
दोनों में बालक का चाँद को पाने की जिद और माँ के वात्सल्य का भाव एक-सा है।

(ख) सुमित्रनंदन पंत — 'वियोगी होगा पहला कवि...'
पंत की इन पंक्तियों में भाव है कि पहली कविता वियोग और भाव-विह्वलता से जन्मी — हृदय की गहरी अनुभूति से कविता स्वतः निकल आती है।
फ़िराक की रुबाइयों में यह भाव प्रत्यक्ष समानांतर नहीं है। इन पाँच रुबाइयों का विषय वात्सल्य और लोक-जीवन है, वियोग-जनित काव्य-सृजन नहीं। अतः इन पाँच रुबाइयों में पंत की इन पंक्तियों के साथ कोई सटीक समानार्थी पंक्ति नहीं है।

(ग) कबीर — 'सीस उतारे भुईं धरे तब मिलिहैं करतार।'
कबीर की इस पंक्ति में भाव है — अहंकार को त्यागकर ईश्वर को पाना; अपना सर्वस्व अर्पित करना।
फ़िराक की रुबाइयों में यह भाव — आत्म-समर्पण, सर्वस्व अर्पण — प्रत्यक्ष रूप में नहीं है। पाँचों रुबाइयाँ माँ-बालक के वात्सल्य और भाई-बहन के स्नेह पर केंद्रित हैं। कबीर की इस पंक्ति के साथ इन रुबाइयों में कोई सटीक समानार्थी पंक्ति नहीं है।

उत्तर: (क) सूरदास 'मैया मैं तो चंद्र खिलौना लैहों' — समानार्थी रुबाई पंक्ति: 'आँगन में ठुनक रहा है जिदयाया है / बालक तो हई चाँद पै ललचाया है' (चौथी रुबाई) — दोनों में बालक का चाँद पाने की जिद और वात्सल्य-भाव एक-सा है। (ख) पंत और (ग) कबीर की पंक्तियों के साथ इन पाँच रुबाइयों (वात्सल्य/रक्षाबंधन विषय) में कोई सटीक समानार्थी पंक्ति नहीं है।

प्रश्नावली 8.5 — शब्द-छवि

प्रश्न 1

नीचे दिए गए शब्दों के अर्थ लिखिए: लोका देना — हई — शब

हल

लोका देना — उछाल-उछाल कर प्यार करने की एक क्रिया। (शब्द-छवि में दिया गया अर्थ: 'उछाल-उछाल कर प्यार करने की एक क्रिया।') माँ बच्चे को हाथों पर उछालकर प्यार करती है — यह लोकभाषा का क्रिया-शब्द है।
हई — है ही। (बोलचाल/लोकभाषा का रूप) जैसे: 'बालक तो हई चाँद पै ललचाया है' — अर्थात् बालक तो है ही चाँद पर ललचाया हुआ।
शब — रात। (उर्दू/फ़ारसी शब्द) 'शब' का अर्थ रात है, जो उर्दू-फ़ारसी से लिया गया है।

उत्तर: लोका देना — उछाल-उछाल कर प्यार करने की एक क्रिया; हई — है ही (लोकभाषा रूप); शब — रात (उर्दू/फ़ारसी)।